।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2081 माघ कृष्ण तृतीया, 16-31 जनवरी 2025 (16-31 Jan. 2025), • वर्ष 4 (Year-4), • अंक 17 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

बचपन पर भारी स्मार्टफोन, मानसिक एकाग्रता व सेहत के लिये अत्यंत हानिकारक

हावड़ा (संजय कु. सिंह) : तकनीक के जरिये विकास की अंधी दौड़ में हम बहुत कुछ खो भी रहे हैं। इंसान कभी मशीन से संचालित नहीं हो सकता। मानवीय संवेदनाएं और अहसास कभी कृत्रिम नहीं हो सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो कोई तकनीक, मशीन व उपकरण सहयोगी तो हो सकते हैं, मगर मालिक नहीं हो सकते। कमोबेश यही बात शिक्षा में तेजी से बढ़ते स्मार्टफोन के उपयोग और उसके घातक प्रभावों को लेकर कही जा सकती है। निस्संदेह, शिक्षा के बाजारीकरण और नई शैक्षिक परिपाटी में मोबाइल की अपरिहार्यता को महंगे स्कूलों ने स्टेटस सिंबल बना दिया है। लेकिन हालिया वैश्विक सर्वेक्षण बता रहे हैं कि पढ़ाई में अत्यधिक मोबाइल का प्रयोग विद्यार्थियों के लिये मानसिक व शारीरिक समस्याएं खड़ी कर रहा है। निस्संदेह, विभिन्न ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रमों के चलते छात्र-छात्राओं में मोबाइल फोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। तमाम पब्लिक स्कूलों ने ऑनलाइन शिक्षा के लिए मोबाइल फोन का इस्तेमाल अनिवार्य तक बना दिया है। कमोबेश सरकारी स्कूलों में ऐसी बाध्यता नहीं है। लेकिन वैश्विक स्तर पर किए गए सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया है कि स्मार्टफोन एक हद तक तो सीखने की प्रक्रिया में मददगार साबित हुआ है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभावों को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि एक समय महज बातचीत का जरिया माना जाने वाला मोबाइल फोन आज दैनिक जीवन

की जरूरतों को पूरा करने वाला बेहद जरूरी उपकरण बन चुका है। खासकर कोरोना संकट के चलते स्कूल-कालेजों के बंद होने के बाद तो यह पढ़ाई का अनिवार्य हिस्सा बन गया। तब लगा था कि इसके बिना तो पढ़ाई संभव ही नहीं है। लेकिन नादान बच्चों के हाथ में मोबाइल बंदर के हाथ में उस्तरे जैसा ही है। जाहिर तौर पर ये उनके भटकाव और मानसिक विचलन का कारण भी बन सकता है। अब इसके मानसिक व शारीरिक दुष्प्रभावों पर व्यापक स्तर पर बात होने लगी है। यहां तक कि आस्ट्रेलिया समेत तमाम विकसित देश स्कूलों में मोबाइल के उपयोग पर रोक लगा रहे हैं।

अब तो यूनेस्को अर्थात संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन की दुनिया में शैक्षिक स्थिति पर नजर रखने वाली टीम ने भी स्मार्टफोन के उपयोग से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता जतायी है। इसकी रिपोर्ट भारत में शिक्षा के नीति-नियंताओं की आंख खोलने वाली है। यूनेस्को की टीम के मुताबिक बीते साल के अंत तक कुल पंजीकृत शिक्षा प्रणालियों में से चालीस फीसदी ने सख्त कानून या नीति बनाकर स्कूलों में छात्रों के स्मार्टफोन के प्रयोग पर रोक लगा दी है। दरअसल, आधुनिक शिक्षा के साथ कदमताल की दलील देकर तमाम पब्लिक स्कूलों में मोबाइल के उपयोग को अनिवार्य बना दिया गया। निस्संदेह, आधुनिक समय में स्मार्टफोन कई तरह से शिक्षा में मददगार है। लेकिन यहां प्रश्न इसके निरंकुश प्रयोग का है। साथ ही दुनिया में बेलगाम इंटरनेट पर परोसी जा रही अनुचित सामग्री और बच्चों पर पड़ने वाले उसके दुष्प्रभावों पर भी दुनिया में विमर्श जारी है। जिसमें प्रश्न बच्चों की निजता का भी है। वहीं प्रश्न ज्यादा प्रयोग से बच्चों के दिमाग व शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का भी है। निस्संदेह, शिक्षकों व अभिभावकों की देखरेख में सीखने की प्रक्रिया में स्मार्टफोन का सीमित उपयोग तो लाभदायक हो सकता है। लेकिन इसका अंधाधुंध व गलत उपयोग घातक भी हो सकता है। दरअसल, स्मार्टफोन में वयस्कों से जुड़े तमाम एप ऐसे भी हैं जो समय से पहले बच्चों को वयस्क बना रहे हैं। उन्हें यौन कुंठित बना रहे हैं। बड़ी चुनौती यह है कि बच्चों की एकाग्रता भंग हो रही है। बच्चों में बात करने की क्षमता घट रही है। ऐसे में जब शिक्षा में स्मार्टफोन का उपयोग टाला नहीं जा सकता, लेकिन उसका नियंत्रित उपयोग तो किया ही जा सकता है। निस्संदेह उसका उपयोग सीमित किया जाना चाहिए। संकट यह भी कि मोबाइल पर खेले जाने वाले ऑन लाइन गेम जहां बच्चों को मैदानी खेलों से दूर कर रहे हैं, वहीं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर डाल रहे हैं। निश्चित तौर पर फोन छात्र-छात्राओं का सहायक तो बन सकता है, लेकिन उनके दिमाग को नियंत्रित करने वाला नहीं।

निर्दलीय पार्षद प्रत्याशी पुजा आनंद राजनीतिज्ञ महारथियों से ले रही है लोहा

गुरुग्राम : हरियाणा निकाय चुनाव को लेकर सभी पार्टियों व प्रत्याशियों ने अपने समर्थकों के साथ मिलकर चुनाव प्रचार में अपना पूरा दमखम झोंक दिया है। ग़ौरतलब हो की दो मार्च को होने वाले चुनाव में गुरुग्राम और मानेसर नगर निगम के 56 वार्ड 286 उम्मीदवार चुनावी मैदान में अपना भाग्य आज़मा रहे हैं।वहीं वार्ड संख्या 18 से जुझारू प्रत्याशी पुजा आनंद ने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना भाग्य आज़मा रहीं हैं। वे मूल रूप से गया कि रहने वाली है और पिछले कई वर्षों से समाज सेवा में सक्रिय रूप से काम किया है व शाखा से जुड़ी हुई हैं। गुरुग्राम सेक्टर 69 के तुलिप वायलेट के आरडब्ल्यूए अध्यक्ष चुनी गई। वे पिछले कई सालों से दिल्ली जल

शक्ति मंत्रालय के सदस्य भी हैं। उन्हें कई बार समाजिक कार्यों को लेकर सम्मानित भी किया गया है। वार्ड संख्या 18 के निर्दलीय प्रत्याशी पुजा आनंद ने अपने कई समर्थकों साथ एक औपचारिक मुलाक़ात के दौरान उन्होंने हमारे सहयोगी समाजसेवी व अभियंता आरके जायसवाल से जानकारी देते हुए समाज सेविका के रूप में किए गए अनेकों कार्यों की उपलब्धियों के बारे में बताया, जिसमें दिल्ली यमुना सफ़ाई अभियान से लेकर अन्य राज्यों सहित गुरुग्राम के अनेक कार्य शामिल हैं और इसी मद्देनज़र डोर टू डोर अभियान चलाकर लोगों से अपने समर्थन में वोट मांग रही हैं।

वहीं अभी पिछले कुछ दिनों से निकाय चुनाव में नामांकन के बाद लगातार अपने अनेकों परेशानियों का सामना कर रही हैं। उन्होंने और उनके अपनी बेटी तितिक्षा आनंद के द्वारा सोशल मीडिया पर बताया कि उनके व्हाट्सऐप नंबर को किसी के द्वारा ब्लॉक कर दिया गया है और उन्हें बराबर धमकियाँ भी मिल रही है। इस पर उन्होंने कहा है कि अभी हम अपने रास्ते में खड़ी की गई परिस्थितियों से हमें लड़ने आता है और हम हर जोड़ जुर्म से जब तक ज़िंदा रहूँगी तब तक लड़ूँगी और की भलाई मद्देनज़र काम करती रहूँगी। साथ ही कहा की कोई कुछ भी कर ले अपने रास्ते से नहीं भटकने वाली हूँ।

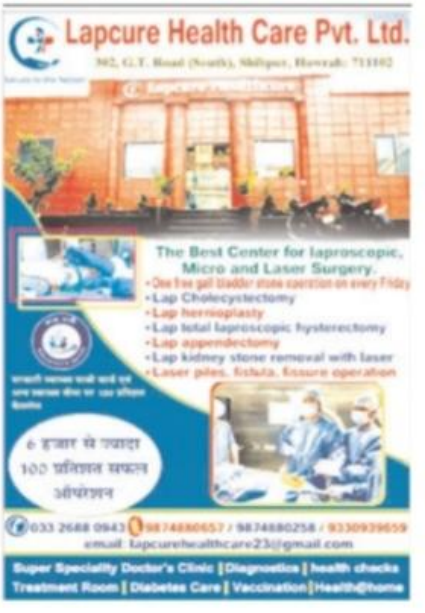

किसान सम्मान निधि जनसभा में प्रधानमंत्री के आगमन पर भव्य स्वागत

भागलपुर : आगामी 24 फ़रवरी को भागलपुर में आयोजित किसान सम्मान निधि जनसभा को लेकर भव्य तैयारियाँ की जा रहीं है इस कार्यक्रम को लेकर भाजपा किसान मोर्चा द्वारा किसान सम्मान निधि जनसभा में प्रधानमंत्री के आगमन पर भव्य स्वागत के लिए तैयारियाँ शुरू कर दीं हैं । भाजपा किसान मोर्चा बिहार प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह, उपाध्यक्ष हितेंद्र ठाकुर उर्फ नुनु ठाकुर, महामंत्री नवीन कुमार व अश्विनी कुमार यादव द्वारा इस आयोजन के सफलता को लेकर बेहद तैयारी की जा रही है। भाजपा किसान मोर्चा बिहार प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह, उपाध्यक्ष हितेंद्र ठाकुर उर्फ नुनु ठाकुर ने हमारे सहयोगी ई आर के जायसवाल से बातचीत के दौरान जानकारी देते हुए बताया की प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर भव्य स्वागत का एक ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा। क्योंकि हाल के बजट में देश सहित बिहार प्रदेश को विशेष ध्यान दिया गया है जिससे किसानों के लिए बेहतर बनाने हेतु ज़ोर दिया गया है । जिसमें मखाना बोर्ड का गठन, कोशी नहर परियोजना को आगे बढ़ाने की मंजुरी एवं पटना आई आई टी एवं पटना तथा बिहटा हवाई अड्डा का विस्तार बिहार इत्यादि । ग़ौरतलब हो की 24 फरवरी को लगभग 9.80 करोड़ किसानों को 19वीं किस्त में 22,000 करोड़ रुपए से अधिक राशि किसानों को सीधे उनके बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 19वीं किस्त का इंतजार कर रहे किसानों किसानों के लिए यह बेहद खुशखबरी है और यह 24 फरवरी को किसानों का इंतजार खत्म होने वाला है। क्योंकि यह सौगात बिहार के भागलपुर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बजट दबाकर प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना 19वीं किस्त के तहत 2000 रुपये किसानों के बैंक खातों में ट्रांसफर करेंगे।

'पीर मेला' के दौरान रानीगंज स्टेशन पर विशेष व्यवस्था

आसनसोल : रानीगंज में 'पीर मेला' में भाग लेने वाले यात्रियों की अपेक्षित भीड़ से निपटने के लिए 'पीर मेला' के दौरान दिनांक 19.02.2025 से 28.02.2025 तक रानीगंज स्टेशन पर सभी पैसेंजर/मेमू ट्रेन को दो (2) मिनट का अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया जाएगा। पूर्व रेलवे आसनसोल मंडल के रानीगंज स्टेशनों पर 'पीर मेला' अवधि के दौरान तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त जल आपूर्ति, अतिरिक्त प्रकाश व्यवस्था, ट्रेनों की समयपालनता बनाए रखने आदि के लिए पर्याप्त आवश्यक सुविधा व्यवस्था की जाएगी। असुविधा से बचने के लिए यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को दूर करने के लिए सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा। किसी भी अप्रिय घटना न घटे इसका भी पूरा ध्यान रखा जायेगा । साथ ही सभी आरपीएफ कर्मचारियों को अपनी पूरी निष्ठा के साथ निगरानी रखने की आदेश दिये गये हैं। वहीं यात्रियों से भी अनुरोध किया जा रहा है कि अपनी पूरे धैर्य के साथ आनन्द उठाये। किसी भी तरह के अफवाहों पर ध्यान न दें। किसी भी तरह के लावारिश या संदिग्ध वस्तु दिखने पर रेलवे कर्मचारी को तुरंत सूचना दें।

पीएम मोदी ने मैथिली भाषा को दिया बड़ा सम्मान

पटना ब्यूरो : बिहार विधानसभा चुनाव के पहले केंद्र सरकार ने बिहार को एक और बड़ी सौगात दे दी है। मखाने के बाद अब बिहार के मैथिली भाषा को केंद्र की और बड़ा सम्मान दिया गया है। आज का दिन बिहार के लिए अहम माना जा रहा है। दरअसल, सदन में बजट सत्र चल रहा है। सत्र के दौरान आज एक अहम फैसला लिया गया। केंद्र ने मैथिली भाषा को सदन के भाषणों के ट्रांसलेट में शामिल कर दिया है। पहले इसमें 22 भाषा शामिल था वहीं आज 6 और भाषा को जोड़ा गया है। जिसमें से एक मैथिली भाषा भी है। आसान शब्दों में समझाए तो पीएम मोदी ने मैथिली भाषा को बड़ा उपहार किया है। सदन में अगर सांसद हिन्दी, अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा में अपनी बातों को रख रहे हैं तो आप उसे ट्रांसलेट कर मैथिली में सुन सकते हैं। पहले इस सूची में हिन्दी, अंग्रेजी सहित 22 भाषाएं शामिल थी वहीं आज 6 अन्य भाषाओं को शामिल किया गया है। जिसके बाद अब सदन के भाषण को आम लोग 28 भाषाओं में सुन सकेंगे।

पूर्वांचल भवन पर संगीतमय सुंदरकांड पाठ का भव्य आयोजन

गुरुग्राम : पूर्वांचल जन कल्याण संघ मारुति कुंज के तत्वावधान में पूर्वांचल भवन पर संगीतमय सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ों लोगों ने शिरकत किया, इसमें महिलाओं की बड़ी भागीदारी रही। संस्था के अध्यक्ष विनोद कुमार ने हमारे सहयोगी व समाजसेवी ई आरके जायसवाल से बातचीत में बताया कि पूर्वांचल जन कल्याण संघ मारुति कुंज (रजि) ने पहली बार संगीतमय सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन किया। पुजा कि शुरुआत सबसे पहले पंडित जी द्वारा संस्था के महासचिव एस पी साह से सभी देवताओं का पूजन कराया गया। तत्पश्चात संरक्षक ताराचंद तिवारी एवं अध्यक्ष विनोद कुमार एवं अन्य सदस्यों ने मिलकर सभी देवताओं का पूजना किया गया। सुंदरकाण्ड का पाठ अपने संस्था के स्थानीय कार्यकर्ताओं व सदस्यों ने किया जिसमें भागीरथ शर्मा एवं अनुज गुप्ता ने शम्मा बांध दिया। उपस्थित सभी लोगों ने खुब आनंद लिया व इस कार्यक्रम की सराहना किया। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय गणमान्य, समाजसेवी व जनप्रतिनिधियों कि उपस्थिति रही, जिसमें मुख्य रूप से सरपंच संजय राघव, सरपंच सुरज्ञान सिंह एवं अमित सिंह भड़ाना इत्यादि मौजूद रहे। सभी ने संस्था के इस पहल की सराहना किया एवं कहा कि किसी भी सार्वजनिक संस्था द्वारा यह पहला सुन्दरकांड पाठ का आयोजन है।

डॉ. बीरबल झा को अंग्रेजी साहित्य रत्न पुरस्कार

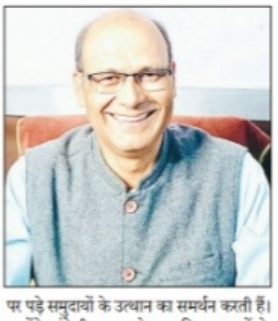

नई दिल्ली : प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार और ब्रिटिश लिगुआ के संस्थापक डॉ. बीरबल झा को अंग्रेजी साहित्य रत्न पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें भारत और वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण और साहित्य में उनके असाधारण योगदान के लिए दिया जा रहा है। दिल्ली में 26 फरवरी को आयोजित एक समारोह में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। डॉ. झा को यह सम्मान अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने और समाज पर उनके गहरे साहित्यिक प्रभाव को मान्यता देने के लिए प्रदान किया जाएगा। उनके प्रयासों ने लाखों लोगों को भाषा की बाधाओं को तोड़ने, अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण और सामाजिक प्रगति हासिल करने में मदद की है। डॉ. बीरबल झा लंबे समय से अंग्रेजी शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का साधन मानते रहे हैं। उनके अग्रणी प्रयासों ने लाखों लोगों को बेहतर रोजगार पाने, अपनी जीवनशैली में सुधार करने और वंचित वर्गों को रोजगार हासिल करने में मदद की है। उनके 'इंग्लिश फॉर ऑल' अभियान ने विविध पृष्ठभूमि के लोगों के लिए अंग्रेजी सीखना सुलभ बना दिया है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों'सेलिब्रेट योर लाइफ,' 'स्पोकन इंग्लिश किट,' और 'इंग्लिश सिम'के साथ-साथ 'लि-गुआ बुलेटिन' ने सीखने वालों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक संचार कौशल प्रदान किया है। उन्होंने भारत में अंग्रेजी भाषा को सहज और लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे यह शिक्षा सभी वर्गों के लिए सुलभ और व्यावहारिक बनी। उनकी शिक्षण पद्धति ने समावेशी वातावरण तैयार किया, जिससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी पृष्ठभूमि के लाखों लोग कम्युनिकेशन स्किल विकसित कर सके। डॉ. झा ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उठाकर सामाजिक चेतना जगाने का काम किया है। उनकी रचनाएं सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान का समर्थन करती हैं। उन्होंने अंग्रेजी भाषा को सामाजिक सुधारों के साथ जोड़कर जागरूकता और परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंग्रेजी साहित्य रत्न पुरस्कार 2025 का समारोह 26 फरवरी 2025 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आरोग्य सृजन न्यास द्वारा आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में डॉ. झा को साहित्य, शिक्षा और भाषा के माध्यम से समाज में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के संयोजक अजीत कुमार ने कहा,'डॉ. बीरबल झा का अंग्रेजी शिक्षा और साहित्य में योगदान अद्वितीय है। भाषा के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने का उनका मिशन हमारी संस्था के शिक्षा और स्वास्थ्य को राष्ट्रीय प्रगति के साथ जोड़ने के लक्ष्य से पूरी तरह मेल खाता है।' डॉ. बीरबल झा एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक न्याय और सामुदायिक विकास के बीच की खाई को पाटने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। एक प्रतिष्ठित लेखक और वैश्विक कौशल प्रशिक्षक होने के साथ-साथ वे एक दूरदर्शी सामाजिक उद्यमी, सांस्कृतिक योद्धा और प्रतिभाशाली गीतकार भी हैं। उन्होंने न केवल हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के लिए कार्य किया, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित किया है। उनकी साहित्यिक कृतियां भारतीय विरासत और परंपराओं के महत्व को उजागर करती हैं और वैश्विक परिदृश्य में स्वदेशी मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देती हैं। अंग्रेजी में लेखन के माध्यम से उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक आख्यानों को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया है। सम्मान प्राप्त करने पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए, डॉ. बीरबल झा ने कहा: 'अंग्रेजी साहित्य रत्न पुरस्कार 2025 प्राप्त करना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। भाषा सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम है और मैं भारत के लोगों के सशक्तिकरण के लिए अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित रहूंगा।

डॉ. बीरबल झा को प्राप्त प्रमुख पुरस्कार :

डॉ. बीरबल झा को उनकी शिक्षा, साहित्य, सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है:

1. राष्ट्रीय शिक्षा उत्कृष्टता पुरस्कार (2010)
2. मैन ऑफ वर्क्स (2011)
3. पर्सन ऑफ द ईयर (2014)
4. एशिया का सितारा पुरस्कार (2016)
5. भारत की महान हस्ती पुरस्कार (2017)
6. बिहार अचीवर पुरस्कार (2017)
7. पागपुरुष पुरस्कार (2017)
8. वेगेस्ट लिविंग लीजेंड ऑफ मिथिला (2017)
9. ग्लोबल स्किल्स ट्रेनर अवार्ड (2022)
10. मिथिला विभूति पुरस्कार (2022)
11. कवि कोकिल विद्यापति पुरस्कार (2022)
12. शिक्षा शिखर सम्मान (2023)
13. पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार (2024)

'इंग्लिश फॉर ऑल' आंदोलन से लेकर 'पाग बचाओ अभियान' तक, डॉ. बीरबल झा की पहल ने समाज पर स्थायी प्रभाव डाला है। उनकी प्रतिबद्धता शैक्षिक उत्कृष्टता, सामाजिक नवाचार और भाषायी सशक्तिकरण को प्रेरित करती रहेगी।

पूर्वांचल भवन पर नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

गुरुग्राम: पूर्वांचल जन कल्याण संघ मारुति कुंज के तत्वावधान में पहली बार नि:शुल्क हेल्थ चेक अप कैम्प एवं ब्लड टेस्ट शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों लोगों ने लाभ प्राप्त किया, इसमें महिलाओं की बड़ी भागीदारी रही। संस्था के अध्यक्ष विनोद कुमार ने समाजसेवी ई आर जायसवाल से बताया कि पूर्वांचल जन कल्याण संघ मारुति कुंज (रजि) ने पहली बार नि:शुल्क हेल्थ चेक अप कैम्प एवं ब्लड टेस्ट शिविर का आयोजन किया जिसमें सैकड़ों लोग लाभान्वित हुए। इसमें महिला, पुरुष एवं बच्चे सभी शामिल थे। मीडिया प्रभारी रौशन कुमार ने संस्था के इस पहल की सराहना किया एवं कहा कि मारुति कुंज, भोंडसी क्षेत्र में किसी भी सार्वजनिक संस्था द्वारा नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का यह पहला आयोजन है। ईएसआई हॉस्पिटल मानेसर के सीएमओ डॉ नरेंद्र कुमार गुप्ता एवं आराध्या डायोग्निसिस के प्रोप्राइटर सुनील मिश्रा के सहयोग से यह नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप एवं ब्लड टेस्ट शिविर का आयोजन हुआ। संस्था के वरिष्ठ संदस्यों ने डॉ नरेंद्र कुमार गुप्ता एवं सुनील मिश्रा को संस्था के तरफ से धन्यवाद दिया एवं मोमेंटो से सम्मानित किया। इस कैम्प फायदा पूर्वांचल के साथ साथ स्थानीय लोगों ने भी उठाया। सभी ने संस्था के इस पहल की सराहना किया। सबसे बड़ी बात कि अपने पूर्वांचल भवन में यह कार्यक्रम किया गया। विनोद कुमार ने कहा कि पूर्वांचल भवन पर महीने में कम से कम एक रविवार को नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया जाएगा।

आरपीएफ ने हावड़ा में एक व्यक्ति को 2.6 करोड़ की विदेशी मुद्रा के साथ पकड़ी

हावड़ा (संजय कुमार सिंह) : रेलवे सुरक्षा बल हावड़ा की अपराध खुफिया शाखा ने हावड़ा रेलवे स्टेशन पर एक संदिग्ध हेमंत कुमार पांडे को रोक उसके पास से 289,000 अमेरिकी डॉलर, 52,500 सऊदी रियाल और 600 सिंगापुर डॉलर की अघोषित विदेशी मुद्रा बरामद किया। आरपीएफ को गोरखपुर क्षेत्र से कोलकाता की ओर अवैध विदेशी मुद्रा की संदिग्ध आवाजाही के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी। तदनुसार, उस क्षेत्र से कोलकाता की ओर जाने वाली ट्रेनों पर निगरानी रखी गई। निगरानी के तहत पटना-हावड़ा जनशताब्दी एक्सप्रेस की जांच की जा रही थी। अपराध खुफिया शाखा द्वारा निरीक्षण के दौरान, मौसम नम और गर्म होने पर एक व्यक्ति जैकेट

पहने हुए था। संदेह होने पर, उसे पूछताछ के लिए रोका गया। पूछताछ के दौरान उसका नाम हेमंत कुमार पांडे बताया गया और उसने विदेशी मुद्रा ले जाने की बात स्वीकार की, लेकिन वैध दस्तावेज नहीं दिखा पाया। तदनुसार, उसे हिरासत में लिया गया और गहन जांच की गई। उसके बैग और कमर की थैली से विदेशी मुद्रा के पैकेट बरामद किए गए और अघोषित विदेशी मुद्रा की कुल राशि 289,000 अमेरिकी डॉलर, 52,500 सऊदी रियाल और 600 सिंगापुर डॉलर थी, जिसका भारतीय मुद्रा में अनुमानित कुल मूल्य 2,60,99,900 रुपये है।

पूछताछ करने पर, उसने खुलासा किया कि उसे गोरखपुर में एक विदेशी मुद्रा ऑपरेटर से विदेशी मुद्रा मिली थी और उसे इसे पार्क स्ट्रीट, कोलकाता में पहुंचाने का निर्देश दिया गया था। बरामद विदेशी मुद्रा और हिरासत में लिए गए व्यक्ति को आगे की जांच के लिए हावड़ा के सीमा शुल्क विभाग को सौंप दिया गया।

रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों में मानसिक चुनौतियां और समाधान

हावड़ा : रेलवे सुरक्षा बल () भारतीय रेलवे की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जो रेलवे परिसर की सुरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा, और मालवाहन के सुरक्षा कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती है। रेसुब कर्मियों का कार्य अत्यधिक जिम्मेदार, तनावपूर्ण और कभी-कभी जोखिमपूर्ण होता है, क्योंकि उन्हें अपनी ड्यूटी में न केवल यात्री सुरक्षा का ध्यान रखना होता है, बल्कि समय पर अपराधों की रोकथाम और समाधान भी करना होता है। ऐसे में रेसुब कर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ सकता है, जो उनके कार्य प्रदर्शन और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित कर सकता है। इस लेख में हम रेसुब कर्मियों में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं को समझने और उनके समाधान के उपायों पर चर्चा करेंगे।

1. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले कारक :- रेसुब कर्मियों को अनेक प्रकार की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इनमें प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं: 1.1 अत्यधिक कार्यभार और तनाव :- रेसुब कर्मियों को अक्सर लंबे समय तक कार्य करना पड़ता है, जो शारीरिक और मानसिक थकान का कारण बनता है। उन्हें लगातार सतर्क रहना होता है, विशेष रूप से रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों में। कार्य की जिम्मेदारी, आकस्मिक घटनाओं का सामना और कभी-कभी जोखिमपूर्ण कार्य स्थितियां मानसिक दबाव को बढ़ा देती हैं। यह तनाव बाद में चिंता, अवसाद और अन्य मानसिक विकारों में परिणत हो सकता है। उनके कार्य समय का स्वरूप अनियमित होता है, जिससे नींद की कमी एवं शारीरिक थकावट हो सकती है। ऐसी स्थिति में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से रेसुब कर्मी प्रायः जूझते हुए विपरीत परिस्थितियों मे व असामंजस्यपूर्ण वातावरण में काम करते हैं, जो चिन्ता और मानसिक थकावट को बढ़ा सकता है। अधिकांश रेसुब अधिकारी व जवान उन स्थानों पर काम करते हैं, जो अलग-थलग या दूरस्थ होते हैं, जहां परिवार या सामाजिक समर्थन प्रणाली तक पहुंच कठिन हो जाती है। इससे अकेलापन और मानसिक तनाव बढ़ जाता है।

1.2 चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना :- रेसुब कर्मियों को अक्सर ऐसे जोखिमपूर्ण हालातों में काम करना पड़ता है, जिनमें अपराधियों से संघर्ष, दुर्घटनाओं की स्थिति या रेलवे में विभिन्न आपातकालीन स्थितियों से निपटना शामिल है। इन घटनाओं का सामना करने से मानसिक आघात हो सकता है, जो (अभिघातजन्य तनाव विकार) जैसी समस्याओं का जनक बन सकता है। यह स्थिति उनके मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

1.3 परिवार और व्यक्तिगत जीवन में तनाव- रेसुब कर्मियों की ड्यूटी अक्सर रात्रि में होती है, जिससे उनके पारिवारिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लंबे समय तक घर से दूर रहने, परिवार के सदस्य से संपर्क न हो पाना, और सामाजिक जीवन में भागीदारी की कमी से तनाव और अकेलापन बढ़ सकता है। यह व्यक्तिगत जीवन में असंतुलन पैदा

करता है और मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर डालता है।

1.4 सामाजिक और सांस्कृतिक दबाव :- रेसुब कर्मियों को समाज में एक विशेष जिम्मेदारी की भावना के साथ कार्य करना पड़ता है। इसके साथ ही, उनकी ड्यूटी की कठिनाइयों और खतरनाक स्थितियों के चलते कई बार उन्हें सामाजिक दबाव और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। ये दबाव मानसिक तनाव का कारण बन सकते हैं।

2. मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लक्षण : रेसुब कर्मियों में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं के विभिन्न लक्षण हो सकते हैं, जो उनके कामकाजी और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं। कुछ सामान्य लक्षण इस प्रकार हो सकते हैं -

अवसाद : अत्यधिक तनाव, अकेलापन और चिंता के कारण रेसुब कर्मियों में अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इस स्थिति में व्यक्ति में उदासी, निराशा, और उत्साह की कमी महसूस होती है।

चिंता और भय : रेसुब कर्मियों को जोखिमपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें चिंता और भय की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

नींद की समस्याएं:- काम के दबाव और तनाव के कारण रेसुब कर्मियों को नींद से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं, जैसे- अनिद्रा या नींद का अत्यधिक आना।

मनोदशा में बदलाव:- मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण, व्यक्ति के मिजाज में तीव्र बदलाव देखे जा सकते हैं, जैसे अत्यधिक गुस्सा या घबराहट का होना।

शारीरिक समस्याएं:- मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाल सकती हैं, जैसे सिरदर्द, पेट की समस्याएं, और शारीरिक थकान।

3. मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के उपाय :-

रेसुब कर्मियों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। इसमें मानसिक, शारीरिक और सामाजिक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए। निम्नलिखित उपायों से रेसुब कर्मियों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हो सकता है:

3.1 मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम :- रेसुब कर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए जागरूकता अभियान चलाना अत्यंत आवश्यक है। उन्हें मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लक्षणों, उनके कारणों और समाधान के तरीकों के बारे में शिक्षा दी जानी चाहिए। इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मियों को यह समझाया जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य भी शारीरिक स्वास्थ्य की तरह महत्वपूर्ण है और इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

3.2 मानसिक स्वास्थ्य परामर्श सेवा :- रेसुब कर्मियों को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए। इसके लिए प्रशिक्षित मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की टीम को नियुक्त किया जा सकता है, जो कर्मियों की मानसिक स्थिति को समझ कर उन्हें उचित मार्गदर्शन और उपचार प्रदान कर सकें। इसके माध्यम से कर्मी अपनी समस्याओं को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं और मानसिक तनाव को कम करने के उपाय सीख सकते हैं।

3.3 कार्यस्थल पर समर्थन और सहयोग:- रेसुब में कार्यस्थल पर एक सहयोगात्मक वातावरण होना चाहिए, जहां कर्मियों को एक-दूसरे से मानसिक और भावनात्मक समर्थन मिल सके। इसके लिए सहकर्मी सहायता कार्यक्रम बेहद प्रभावी हो सकते हैं। इसमें अधिकारी एक दूसरे से जुड़ सकते हैं और अपनी समस्याओं को साझा कर सकते हैं। इससे कार्य का दबाव कम होगा और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों को भी कर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति का ध्यान रखना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें विश्राम या छुट्टी प्रदान करनी चाहिए। इस तरह से इस समस्या को हल कर सकते हैं।

3.4 शारीरिक स्वास्थ्य और फिटनेस:- शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। रेसुब कर्मियों को नियमित शारीरिक व्यायाम और फिटनेस कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है और उन्हें मानसिक रूप से सशक्त बनाता है।

3.5 छुट्टियां और कार्य का संतुलन:- रेसुब कर्मियों को पर्याप्त छुट्टियां दी जानी चाहिए ताकि वे अपने परिवार के साथ समय बिता सकें और कार्य के दबाव से बाहर निकल सकें। इसके साथ ही, उनकी ड्यूटी का समय भी संतुलित किया जाना चाहिए, ताकि लंबे समय तक लगातार काम न करना पड़े और मानसिक थकान न हो।

3.6 परिवारों के लिए समर्थन कार्यक्रम:- रेसुब कर्मियों के परिवारों के लिए भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, ताकि वे समझ सकें कि उनके परिवार के सदस्य मानसिक तनाव का सामना कर रहे हैं। परिवार का समर्थन मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन, और चिंता से निपटने के तरीकों पर प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

3.7 पेशेवर मानसिक स्वास्थ्य सहायता:- यदि किसी रेसुब कर्मी को गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हैं, तो उन्हें पेशेवर मानसिक स्वास्थ्य सहायता की आवश्यकता हो सकती है। इसमें मनोवैज्ञानिक, मानसिक चिकित्सक और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों से उपचार और परामर्श प्राप्त किया जा सकता है।

3.8 गोपनीयता एवं सहायता सेवाओं की सुलभता:- मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभ बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों को बिना किसी डर के मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्राप्त करने के लिए वातावरण तैयार किया जाना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य समर्थन प्रणालियों को पारदर्शी, सुरक्षित और विश्वसनीय बनाया जाना चाहिए। इसके अलावा कर्मचारियों के लिए गोपनीय हेल्पलाइन या ऑनलाइन प्लेटफार्म उपलब्ध कराया जा सकता है, जहां वे अपनी पहचान का खुलासा किए बिना सहायता प्राप्त कर सकें। इससे उन्हें मानसिक स्वास्थ्य के लिए समर्थन प्राप्त करने में अधिक आत्मविश्वास मिलेगा।

4. निष्कर्ष:-

रेसुब कर्मियों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी कार्यक्षमता और जीवन की गुणवत्ता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें लगातार तनाव, जोखिमपूर्ण स्थितियों और शारीरिक-मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता, समर्थन सेवाएं, शारीरिक स्वास्थ्य, और संतुलित कार्य-जीवन शैली पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि इन उपायों को प्रभावी तरीके से लागू किया जाए, तो रेसुब कर्मियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है और वे अपनी कार्यक्षमता को अधिक बेहतर व प्रभावी तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

विशेषज्ञों ने अनिद्रा की समस्या के लिए दवाओं के इस्तेमाल के प्रति किया आगाह

गंभीर समस्याओं का हो सकते हैं शिकार

नई दिल्ली : तेजी से भागती दुनिया में भविष्य सुधारने के लिए भागदौड़ और चिंताओं के कारण रातों की नींद गायब हो जाती है। कई लोग इस समस्या से निपटने के लिए नींद की दवाइयों का सहारा लेते हैं। ऐसी दवाएं एक आसान समाधान प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन विशेषज्ञ गंभीर जोखिमों का हवाला देते हुए स्वास्थ्य पेशेवरों से उचित परामर्श लिए बिना दवाओं के उपयोग को लेकर आगाह करते हैं। निद्रा चिकित्सा के विशेषज्ञ डॉ. मीर फैजल ने ऐसी दवाओं के व्यापक दुरुपयोग पर चिंता व्यक्त की। डॉ. फैजल ने विश्व नींद दिवस पर कहा कि बहुत से लोग ऐसी दवाओं का उपयोग विशेषज्ञों से परामर्श किए बिना करते हैं। ये दवाइयां अस्थायी राहत प्रदान कर सकती हैं, लेकिन शामक दवाओं के कई प्रतिकूल प्रभाव होते हैं। उन्होंने रेखांकित किया कि ये दवाएं मस्तिष्क से लेकर हृदय और गुर्दे तक शरीर की विभिन्न प्रणालियों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। विश्व नींद दिवस हर साल 21 मार्च (जब दिन और रात बराबर होते हैं) से पहले शुक्रवार को मनाया जाता है। यह अच्छी नींद के महत्व को रेखांकित करता है। वर्ल्ड स्लीप सोसाइटी द्वारा 2008 में स्थापित इस दिवस का उद्देश्य अच्छी नींद से स्वास्थ्य संबंधी लाभ के प्रति जागरूकता बढ़ाना, लोगों को नींद संबंधी विकारों के बारे में शिक्षित करना और बेहतर नींद की आदतों को प्रोत्साहित करना है। इस वर्ष विश्व नींद दिवस का विषय है अच्छी नींद को प्राथमिकता दें। फैजल ने चेतावनी दी कि ऐसी दवाइयों के दुष्प्रभाव शुरू में गंभीर नहीं होते हैं लेकिन समय के साथ दुष्प्रभाव गंभीर होने लगते हैं। जब हम इनका सेवन करते हैं, तो एक और समस्या होती है। जब हम लंबे समय तक इनका सेवन करते हैं, तो वे ज्यादा असर नहीं करते। इसलिए व्यक्ति अधिक से अधिक खुराक लेता रहता है। और अधिक खुराक के साथ, हमें अधिक दुष्प्रभाव होते हैं। विशेषज्ञ का कहना है कि खराब नींद सिर्फ एक छोटी समस्या नहीं है, बल्कि इससे हृदय रोग, मधुमेह और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं।

एकता कपूर का पद्मश्री वापस लेने की माँग
108 वकीलों ने राष्ट्रपति को लिखा पत्र

फिल्म प्रोड्यूसर एकता कपूर को दिया गया पद्मश्री वापस लेने की माँग उठी है। भारत के अलग-अलग हिस्सों के 108 वकीलों ने पद्मश्री वापस लेने की अपील राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से की है। उन्होंने इसको लेकर एक पत्र भी राष्ट्रपति मुर्मू को लिखा है। इन वकीलों ने एकता कपूर पर वेब सीरीज के जरिए समाज में अश्लीलता फैलाने का आरोप लगाया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि एकता कपूर की बनाई वेब सीरीज नैतिक मूल्यों के पतन का काम कर रही हैं और पवित्र समझे जाने वाले रिश्तों पर भी कलंक लगा रही हैं। उन्होंने अपने पत्र में एकता कपूर द्वारा बनाई ऐसी तमाम वेब सीरीज की जानकारी भी राष्ट्रपति को दी है। वकीलों ने आरोप लगाया है कि एकता कपूर का बनाया यह कंटेंट भारतीय युवाओं और समाज पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। वकीलों ने माँग की है कि इससे पद्मश्री पुरस्कार की भी गरिमा खतरे में है, ऐसे में इसे वापस लिया जाए। गौरतलब है कि एकता कपूर को 2021 में पद्मश्री पुरस्कार दिया गया था। यह पुरस्कार उनके टीवी एवं सिनेमा में योगदान के चलते दिया गया था।

भारत के इस मंदिर में एक साथ विराजमान है
भगवान शिव और विष्णु

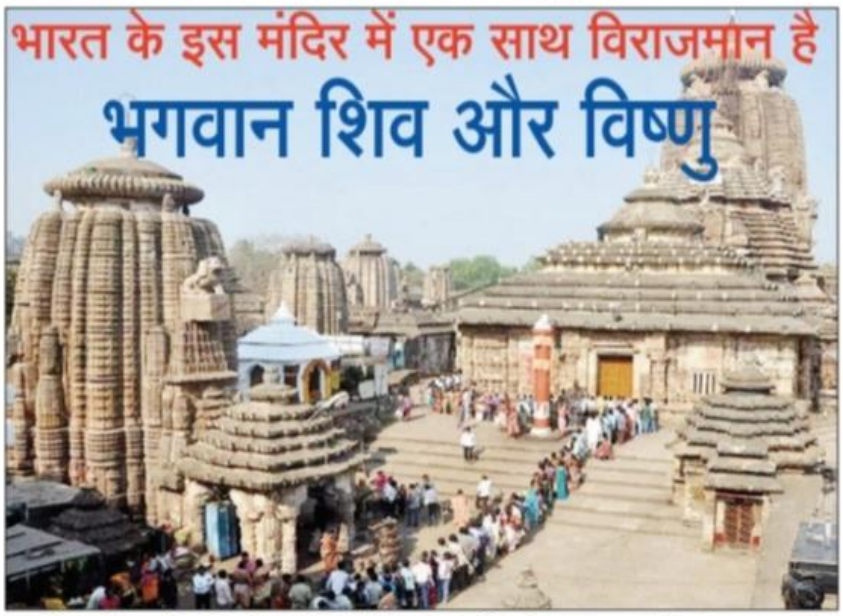

नई दिल्ली : लिंगराज मंदिर ओडिशा के भुवनेश्वर शहर में स्थित एक प्रमुख हिंदू मंदिर है, जो भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर ओडिशा की शहरी संस्कृति और धार्मिक महत्व का प्रतीक है और हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है। माना जाता है कि लिंगराज मंदिर की विशेषताएं इसे न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक नजरिए से भी महत्वपूर्ण बनाती हैं।

कैसे पड़ा इस मंदिर का नाम?

लिंगराज मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में सोमवंशीय राजा ययाति केसरी द्वारा किया गया था। लिंगराज अर्थात लिंगों का राजा से पड़ा है, क्योंकि यह भगवान शिव का सबसे प्रमुख रूप है, जिसे यहां पूजा जाता है। यह मंदिर भुवनेश्वर के प्रमुख धार्मिक केंद्रों में से एक है और ओडिशा के वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण पेश करता है।

अनोखी है मंदिर की बनावट :

लिंगराज मंदिर की वास्तुकला केशरी शैली का अद्वितीय उदाहरण है। मंदिर का शिखर (गुंबद) लगभग 55 मीटर ऊंचा है। इसे शिखर के रूप में डिजाइन किया गया है, जो बहुत ही आकर्षक है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान शिव के लिंग के रूप में पूजा की जाती है और इसके चारों ओर विभिन्न अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी स्थित हैं।

भगवान शिव व हरिहर की एक साथ की जाती है पूजा

मंदिर के भीतर की दीवारों और छतों पर अद्भुत उकेरे गए दृश्य और शिल्प कार्य हैं। इन कला रूपों में शास्त्रीय नृत्य, पशु-पक्षी, धार्मिक दृश्य और कई अन्य प्रतीकात्मक चित्रण शामिल हैं। सबसे खास बात यह है कि इस मंदिर में भगवान शिव और विष्णु की एक साथ पूजा की जाती है। इसलिए इसे वैष्णववाद और शैववाद का सामंजस्य भी कहा जाता है।

मंदिर का जलाशय

मंदिर के पास एक जलाशय, जिसे बिंदुसार ताल भी कहा जाता है। यहां स्नान करने के बाद भक्त मंदिर में प्रवेश करते हैं, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक शुद्धिकरण होता है। मान्यता है कि एक भूमिगत नदी बिंदुसार ताल को भरती है, जिसके पानी को स्वयं भगवान लिंगराज ने आशीर्वाद दिया है।

डॉ विपिन कुमार को प्रतिष्ठित नेशनल एजुकेटर अवार्ड 2025 से किया गया सम्मानित

मेरठ : पंजाब के अमृतसर में मेरठ कॉलेज के डिपार्टमेंट आफ कंप्यूटर साइंस के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ विपिन कुमार को 'आराध्या एक एहसास फाऊंडेशन', मेरठ द्वारा प्रतिष्ठित नेशनल एजुकेटर अवार्ड 2025 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान अमृतसर में आयोजित एक भव्य समारोह में रेखा महाजन, डिप्टी जिला एजुकेशन ऑफिसर, एस हर भगवत सिंह, जिला एजुकेशन ऑफिसर एवं श्री अरविंद मीणा, एसीपी, सब डिवीजन अमृतसर के द्वारा प्रदान किया गया। डॉक्टर विपिन कुमार को मेरठ जिले से आमंत्रित किया गया था। जो शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रभावशाली योगदान को दर्शाता है। अपनी खुशी व्यक्त करते हुए डॉक्टर विपिन कुमार ने कहा यह सामान केवल मेरा नहीं बल्कि पूरे कॉलेज का है। यह सम्मान मुझे और भी प्रभावी बनाएगा और मेरे अनुभवों को बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर डॉ विपिन कुमार ने लोगों को बताया कि उनके द्वारा साइबर क्राइम की पुस्तक लिखी जा रही है जो की आने वाले कुछ समय में आप लोगों के बीच प्रकाशित की जाएगी और लोगों को पता चलेगा की कैसे हम साइबर क्राइम से बचें।

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक सौमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिबपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**वैद्यनाथ झा,** फोन- 9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Baidyanath Jha** Mo. 9798848926, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)